आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 7 अंक : 04 दिसम्बर-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

राज्य में समृद्ध पशुधन हमारी प्राथमिकता में शामिल

प्रिय, किसान, पशुपालक भाइयों और बहनों !

राम–राम सा।

वेटरनरी विश्वविद्यालय शिक्षण, अनुसंधान के साथ–साथ पशु चिकित्सा और पशुपालन के क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकी और तकनीकी के सुग्राही उपकरणों और संसाधनों का राज्य में एक अग्रणी संस्थान है। हम पशुपालन में नवाचारों, किसान और पशुपालकों के कौशल विकास और उनकी बेहतरी के लिए सजग होकर कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय ने अपने सामाजिक सरोकारों के मद्देनजर राज्य के तीनों महाविद्यालय परिसरों, 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और 14 विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के मार्फत पशुपालकों को पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर किसान और पशुपालकों, गौशाला प्रबंधको और अन्य प्रकार के पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहे है पशुधन नवाचार और उद्यमिता ज्ञान (लाइक) योजना में किसानों, पशुपालकों, महिलाओं और युवाओं के लिए लघु अवधि के पाठ्यक्रम भी लागू किये गए हैं। कृषि क्षेत्र से आय बढ़ाने के लिए पशुपालन एवं पशुधन उत्पादन पद्धतियों में नए घटक सम्मिलित करने की आवश्यकता है। डेयरी और अन्य पशुधन उत्पादन पद्धतियों को अपनाने से स्थानीय स्तर पर रोजगार भी आसानी से सुलभ हो जाता है। मुर्गी, बतख, मछली, मधुमक्खी पालन के साथ–साथ खरगोश, सूकर, अश्व, ऊंट पालन उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। मुर्गीपालन में अतिरिक्त आय लेने के लिए जापानी नस्ल की बटेर, टर्की ओर गिनी फाउल का पालन भी किया जा सकता है। इसके लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के सभी संस्थानों और केन्द्रों से मार्गदर्शन और तकनीकी सहयोग लिया जा सकता है। किसान और पशुपालकों की आय को बढ़ाने के लिए राज्य में स्थापित 14 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के मार्फत ''पैकेज ऑफ प्रेक्टिस'' को अमल में लाया जाएगा। इससे कृषि सह पशुपालन के सकारात्मक परिणामों को देखकर किसानों को प्रेरित करने व कार्य करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। मुझे उम्मीद है कि इससे पशुपालकों और किसानों के आर्थिक स्तर में बदलाव लाया जा सकेगा। गौशालाओं के तकनीकी सुदृढ़ीकरण और देशी गौवंश उत्पादों के प्रसार के लिए विश्वविद्यालय के संस्थानों द्वारा कम से कम एक गौशाला को गोद लेकर तकनीकी परामर्श सेवाएं सुलभ करवाई जाएगी। गौशालाओं में पल रहे गौवंश के सुदृढ़ीकरण कार्यों से गौशाला प्रबंधकों को आर्थिक सम्बल मिल सकेगा।

मुझे आशा है कि सभी के मिले–जुले प्रयासों से राज्य में पशुधन को ओर अधिक समृद्ध और लाभकारी बनाया जा सकेगा।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

वैज्ञानिक पशुपालन को लाभदायक बनाने में प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों की भूमिका अहम : कुलपति प्रो. शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जिलों में स्थित 14 प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के कार्यों समीक्षा बैठक 1 नवम्बर को कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में 14 जिलों के प्रभारी अधिकारियों ने ग्रामीण क्षेत्र में किसानों और पशुपालकों के प्रशिक्षण, प्रसार शिक्षा और पशुओं की रोग निदान सेवाओं के प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि जिलों के दूरदराज क्षेत्र में स्वस्थ पशुधन के लिए वैज्ञानिक तकनीक के प्रसार और उन्नत पशुपालन सेवाओं के प्रमुख केन्द्र हैं। जिलों में स्थित सम्बद्ध विभागों से समन्वय और सहयोग से केन्द्र के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभारी अधिकारियों को सचेष्ट रहना होगा। उन्होंने प्रतिदिन केन्द्रों के कार्यों की ऑन लाइन समीक्षा के निर्देश दिए। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूडिया ने बताया कि गत 6 माह की अवधि में केन्द्रों द्वारा 887 प्रकार की विभिन्न गतिविधियां आयोजित कर 24166 किसान और पशुपालकों का लाभान्वित किया गया है। इनमें पशुपालकों को रोग निदान सेवाओं के तहत 753 रक्त, मूत्र, दूध इत्यादि के नमूनों की प्रयोगशाला जांच कर प्रतिवेदन दिये गए। वैज्ञानिक और उन्नत पशुपालन के लिए ग्रामीण क्षेत्रों और केन्द्र पर 624 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 2933 पशुपालक व कृषकों को लाभान्वित किया गया। बैठक में प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी सहित 14 केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों ने भाग लिया।

देशी गौवंश दुग्ध उत्पादक पार्लर शुरू किये जायेंगेः कुलपति प्रो. शर्मा

दशाब्दी वर्ष में पशु कल्याण के कई नवाचार प्रारंभ

वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य के तीनों महाविद्यालय परिसरों में देशी गौवंश दूध उत्पादक पार्लर शुरू करके लोगों को गुणवत्ता वाले उत्पाद मुहैय्या करवाएगा। 14 जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिक राज्य में पशुपालकों के लिए "पैकेज ऑफ प्रेक्टिस" लागू करके पशुचिकित्सा और पशुपालन के सुदृढीकरण कार्य में जुटेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने 21 नवम्बर को विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर के साथ मंथन बैठक में इस आशय के निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि माननीय राज्यपाल और कुलाधिपति द्वारा राज्य के कुलपति समन्वय समिति की बैठक में दिए गए निर्देशों की अनुपालना में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा सामाजिक सरोकार और कौशल विकास के उपयोगी कार्यक्रम पूरी शिद्दत के साथ लागू किए जा रहे हैं। पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता पूर्व शिक्षण और प्रशिक्षण द्वारा लोगों में चेतना लाई जाएगी। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय में उपलब्ध संवेदनशील उन्नत तकनीक के उपकरणों और प्रयोगशालाओं का दायरा बढ़ाकर उपयोगिता को प्रभावी स्वरूप दिया जाएगा। गौशाला तकनीकी सुदृढ़ीकरण के तहत विश्वविद्यालय के सभी महाविद्यालयों, अनुसंधान और प्रशिक्षण केन्द्रों द्वारा एक–एक गौशालाओं को गोद लेकर उनके चहुँमुखी विकास के लिए तकनीकी परामर्श सेवाएं सुलभ करवायी जाएगी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के सभी संस्थानों और केन्द्रों को "ग्रीन, क्लीन और प्लास्टिक मुक्त" परिसर में विकसित करने का निर्णय लिया गया। सभी संस्था प्रधानों को सौर ऊर्जा और वर्षा जल संरक्षण कार्यों की उपयोगिता को प्राथमिकता देने की हिदायत दी गई। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों को पशु आहार निर्माण में आत्मनिर्भर बनाने, अनुसंधान के पैटेन्ट और जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण करवाने के लिए निर्देशित किया गया।

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

राजुवास के दशाब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर में आयोजित **''राष्ट्रीय दुग्ध दिवस''** कार्यक्रम में 26 नवम्बर को एक तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. हिम्मत सिंह, निदेशक, डेयरी उद्योग कॉन्फ्रेन्स, जयपुर, विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एस. लठवाल, प्रिंसिपल साइन्टिस्ट, एन.डी.आर.आई., करनाल, श्री राहुल सक्सेना, एम.डी., जयपुर डेयरी एवं सेकेट्री जनरल (डेयरी उद्योग कॉन्फ्रेन्स, जयपुर), श्री. आर.के. सिंह, सी.ई.ओ., पायस डेयरी, डॉ. प्रत्युष जोशी, सदस्य एन.डी.डी.बी, जयपुर एवं पायस डेयरी, प्रो. (डॉ.) जी.सी. गहलोत, अधिष्ठाता, पी. जी.आई.वी.ई.आर. एवं संस्थान के संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

प्रो. (डॉ.) संजीता शर्मा, मुख्य अन्वेषक, एडवान्स मिल्क टेस्टिंग रिसर्च लेबोरेट्री, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर ने अपने तकनीकी व्याख्यान में स्वच्छ, सुरक्षित एवं गुणवत्तायुक्त दुग्ध उत्पादन के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉ. हिम्मत सिंह ने डॉ. वर्गीज कुरियन के चमत्कारिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए ऑपरेशन फ्लड में उनके योगदान के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. लठवाल ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि श्वेत क्रांति के कारण ही भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में नम्बर एक स्थान पर पहुँच पाया। श्री सक्सेना ने डॉ. कुरियन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए डेयरी के को–ऑपरेटिव मॉडल तथा श्वेत क्रांति में उनकी भूमिका से अवगत कराया। श्री आर.के. सिंह ने भी डॉ. कुरियन के डेयरी उद्योग में योगदान के बारे में जानकारी दी।

शिवमोगा (कर्नाटक) वेटरनरी कॉलेज के 60 छात्र–छात्राओं का राजुवास भ्रमण

कर्नाटक के शिवमोगा वेटरनरी कॉलेज स्नातक अंतिम वर्ष के 60 विद्यार्थियों ने उत्तरी भारत के शैक्षणिक भ्रमण के तहत 27 नवम्बर को

वेटरनरी विश्वविद्यालय के विभागों का भ्रमण कर पशुचिकित्सा उपचार, अनुसंधान और पशुपालन की तकनीकों को देखा और कार्यप्रणाली की जानकारी ली। दल के प्रभारी डॉ. सुरेश पटेल और डॉ. वैंकटेश के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने टीचिंग वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स, मेडिसिन और पशुपोषण विभाग का भ्रमण किया। पशु शल्यचिकित्सा एंव रेडियोलॉजी विभाग में लेजर किरणों से शल्य क्रिया, सीटी स्केन मशीन, अल्ट्रासोनोग्राफी तकनीकों और छोटे–बड़े पशुओं के शल्य चिकित्सा कक्ष, ओ.पी.डी. और अन्य उपचार सुविधाओं की जानकारी ली। विभिन्न प्रयोगशालाओं में किए जा रहे अनुसंधान कार्यों का भी जायजा लिया। राजुवास की डॉ. सुनीता चौधरी ने बताया कि वेटरनरी छात्र–छात्राओं ने पशुचिकित्सा निदान प्रयोगशाला, ब्लड बैंक, इलेक्ट्रोकॉर्डियोग्राफी, इन्डोर सुविधाओं का भी अवलोकन किया। दल के सदस्यों ने 1 राज. आर. एण्ड वी. एन. सी.सी. के परिसर में जाकर अश्वों के रखरखाव व घुड़सवारी के कार्यों को भी देखा। ।

स्वदेशी नस्लों के संरक्षण पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण 25 नवम्बर को संपन्न हो गया। इस प्रशिक्षण में विभिन्न राज्यों से आए 17 सहायक प्रोफेसर सम्मिलित हुए। समापन सत्र की मुख्य अतिथि विधायक, सादुलपुर एवं पद्म श्री एवं अर्जुन अवार्ड पुस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. कृष्णा पूनिया ने प्रशिक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें आज के परिवेश में देशी पशुओं के संरक्षण एवं उनके रखरखाव की तरफ ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है यह हमारे प्रदेश की धरोहर है। ग्रामीण परिवेश में देशी नस्ल के पशु ही कृषि एवं पशुपालन से आजीविका का मुख्य आधार है अतः युवाओं को पशुपालन संबंधित रोजगारोन्मुखी व्यवसाय को अपनाना चाहिए। उन्होने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे राज्य की देशी नस्लों के रखरखाव एवं उन्नयन कार्यों पर प्रसन्नता जताई। मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षण पुस्तिका "पशुधन की स्वदेशी नस्लों के संरक्षण से सम्बधित वर्तमान स्थिति, उभरते हुए मुद्दे और भविष्य का परिदृश्य" का विमोचन भी किया। वेटरनरी कॉलेज के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. एस.सी. गोस्वामी ने स्वागत भाषण में देशी पशुधन नस्लों की विशेषताओं व उपयोगिता तथा वेटरनरी विश्वविद्यालय में इस क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान कार्यों की जानकारी दी। प्रशिक्षण समन्वयक प्रो. विजय कुमार ने बताया कि 21 दिवसीय प्रशिक्षण में 60 विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और डेमो प्रस्तुत किये गए। प्रायोगिक कार्य के रूप में वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय उष्ट्र, भेड़, अश्व अनुसंधान केन्द्रों एवं विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र चांदन, बीकानेर, बीछवाल और कोड़मदेसर के भ्रमण के अलावा वेटरनरी विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में कार्य प्रणाली का अवलोकन किया। इस अवसर पर अतिथियों ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किये। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलसचिव अजीत सिंह, वेटरनरी कॉलेज अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी, निदेशक अनुसंधान प्रो. आर.के. सिंह, डीन पी.जी.एस. प्रो. ए.के. कटारिया, पी.एम.ई. निदेशक प्रो. अन्जु चाहर, विशेषाधिकारी प्रो. आर.के. धूड़िया, प्रो. गोविन्द सिंह, परीक्षा नियंत्रक प्रो. सुनिल मेहरचन्दानी एवं निदेशक (कार्य) एम. राम कार्यक्रम में उपस्थित थे।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 7, 14, 16 एवं 18 नवम्बर को गांव सारसर, गोठया छोटी, हरियासर घड़सोतान एवं बरलाजसर गांवों में तथा दिनांक 22 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 5, 7, 14, 18 एवं 20 नवम्बर को गांव मम्मड़, संगतपुरा, 7–एस–ा, जानकीदास वाला एवं कोथोन गांवो में तथा दिनांक 21 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 205 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7 एवं 15 नवम्बर को गांव कुई एवं पहाड़कला गांवो में तथा 19 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 69 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 8 एवं 15 नवम्बर को गांव बेरिडखुर्द, सोनली एवं नेखाजोधा गांवों में तथा 16 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 19, 21 एवं 25 नवम्बर को गांव कबलवाला, डोडीफलां एवं डेचाफलां गांवों में तथा दिनांक 16, 18, 20 एवं 22 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 6 एवं 16 नवम्बर को गांव चक कप्रोना एवं भगवानुपरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 24 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 11, 13, 14 एवं 15 नवम्बर को गांव कडीला, कलमण्डा, भगवानपुरा, धोली एवं लावा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 4, 6, 13, 14 एवं 19 नवम्बर को गांव सामरद, पहलवानों का बेरा, कालवास, मौलानीया एवं भाडेरा गांवों में तथा 16 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 14 एवं 21 नवम्बर को गांव धनसूरी, चौमामालियान, उदपुरिया गांवों में तथा 25 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 104 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 8 नवम्बर को गांव उखलिया में तथा 13 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 66 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 14 एवं 21 नवम्बर को गांव तोर, नया गांव एवं सलेमपुर गांवों में तथा 22 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 118 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 6, 14 एवं 16 नवम्बर को गांव काकोव, बिरासनी एवं फिटकासनी गांवों में तथा 19 एवं 26 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 118 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी झुंझुनूं द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 16, 23 एवं 26 नवम्बर को गांव बिरोल, कोलसिया एवं बाय गांवों में तथा 8 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 21, 22 एवं 28 नवम्बर को गांव रामगढ़, बडबिराना एवं गुड़िया गांवों में एक दिवसीय तथा 7–8, 13–14, 15–16, 18–19 एवं 25–26 नवम्बर को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 किसानों ने भाग लिया।

पशुओं को सर्दी जनित रोगों से कैसे बचायें ?

इस वर्ष पूरे राज्य में अच्छी वर्षा हो चुकी है और कई स्थानों पर ओलावृष्टि के साथ–साथ भारी बारिश माह नवम्बर माह तक हो रही थी। इसके कारण इस वर्ष सर्दी ने जल्दी दस्तक दी है। सर्दी के जल्दी आने से पशुपालक पूर्णरूप से तैयार नहीं है, साथ ही मौसम में अचानक बदलाव से पशु भी कई प्रकार के सर्दी जनित रोगों से प्रभावित हो सकते हैं। इन रोगों में मुख्य रूप से श्वसन सम्बन्धी रोग हैं जिनमें न्यूमोनिया होने की सबसे ज्यादा सम्भावना रहती है। न्यूमोनिया रोग से यदि छोटे पशु जैसे बछड़ा–बछड़ी, पाडे–पाडी, मेमने इत्यादि प्रभावित होते हैं तो उनमें अत्यधिक मृत्यु की संभावना रहती हैं। पशुपालक न्यूमोनिया को लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचान सकते हैं। नाक से स्त्राव निकलना, जो शुरू में पानी जैसे पतला फिर बाद में गाढ़ा पीला या हरे रंग का हो जाता है, तेज बुखार, चरना–पीना बंद, पशु का सुस्त होना, शरीर के बाल खड़े होना, तेज सांस चलना और 3–5 दिनों में मृत्यु होना सामान्य लक्षण है। दुधारू पशुओं में अचानक दूध उत्पादन कम हो जाता है। इस मौसम में वातावरण में नमी बढ़ जाती है व धुंध भी शुरू हो जाती है। इन कारणों से पशु तनाव (स्ट्रैस) से ग्रसित होकर गलघोंटू से भी प्रभावित होकर मौत का शिकार हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस मौसम में खुरपका–मुंहपका नामक विषाणुजनित रोग भी होना आम बात है जिसके कारण छोटे बच्चों में ज्यादा मृत्यु होती है और बड़े पशुओं में दुग्ध उत्पादन में भारी गिरावट के साथ कार्य क्षमता में कमी आती है। मुर्गियों में भी तेज सर्दी के काफी दुष्प्रभाव होते हैं और उनमें मृत्यु का खतरा बना रहता है। इस मौसम में अपने पशु–पक्षियों को सभी रोगों से बचाने के लिए पशुपालकों को आवश्यक उपाय कर सावधानी बरतनी चाहिए:

1. छोटे पशुओं को दिन के समय धूप में तथा रात्रि को पशुघर, छप्पर अथवा पेड़ की छाया में बांधें।
2. पशुघर में सर्दी से बचाव के लिए धुंआ ना करें अन्यथा न्यूमोनिया ज्यादा हो सकता है।
3. पशुघर में शुद्ध हवा का आवागमन नियमित होना चाहिए।
4. नमी, सर्दी व धुंध के समय पशु को पर्याप्त आराम देना चाहिए ताकि उन्हें गलघोंटू जैसे खतरनाक रोग से बचाया जा सके।
5. खुरपका–मुंहपका रोग से बचाव के लिए पशुचिकित्सक के द्वारा टीकाकरण करवायें। इस मौसम में मुर्गियां विशेषकर चूजे बहुत अधिक प्रभावित होते हैं और भारी संख्या में मृत्यु होती है।

मुर्गीघर में खिड़की–दरवाजों पर पल्ली लगाकर चूजों को ठण्डी हवा से बचायें व प्रकाश का पूर्ण इन्तजाम करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुओं के नवजात बच्चों के लिए खीस का महत्व

जिस प्रकार से इंसानों में मां के पहले दूध का उसके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव को समय–समय पर वर्णित किया जाता है, उसी प्रकार यह जरूरी है कि पशुओं के पहले दूध यानी खीस या कोलोस्ट्रम का नवजात पशुओं पर पड़ने वाले प्रभाव को भी वर्णित किया जाए। एक पशुपालक की सफलता का राज इसमें छिपा होता है कि उसके नवजात बछड़े–बछड़ियों का स्वास्थ्य कैसा है तथा उनकी रोगों से मुकाबला करने की क्षमता कैसी है, क्योंकि उन्हीं नवजातों पर आगे चलकर दूध उत्पादन या अच्छी नस्ल के पशु तैयार करने की जिम्मेदारी होती है।

खीस या कोलोस्ट्रमः– बच्चे के जन्म के बाद पशु जो प्रथम पीला व गाढ़ा दूध देता है उसे खीस या कोलोस्ट्रम कहते हैं जो कि नवजात पशु के लिए जीवनदायक अमृत की तरह काम करता है तथा बीमारियों से बचने के लिए नवजात की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है। कोलोस्ट्रम में एक सामान्य दूध की तुलना में 4–5 गुना अधिक प्रोटीन और 10–15 गुना अधिक विटामिन–ए होता है। आमतौर पर अधिकतर पशुपालकों में यह भ्रान्ति रहती है कि जब तक गाय या भैंस जेर नहीं डाल देती तब तक पशु से न तो खीस या कोलोस्ट्रम निकालना चाहिए और न ही नवजात को पिलाना चाहिए। लेकिन इस गलत धारणा से नवजात को रोगों से लड़ने के लिए पर्याप्त प्रतिरोधक क्षमता नहीं मिल पाती , इसलिए पशुपालकों को जन्म के तुंरत बाद नवजात को खीस पिलाना चाहिए और यदि नवजात खड़ा होने में असमर्थता जाहिर करें तो खीस निकालकर पिला देना चाहिए।

खीस क्यों पिलाना चाहिए :–

1. खीस में एंटीबॉडी पर्याप्त मात्रा में रहती है जो नवजात को विभिन्न रोगों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. खीस में ट्रिप्सिन जैसे अवरोधक एन्जाइम होते है जो कि एंटीबॉडी को आंत में विघटित होने से बचाते हैं जिससे ये ज्यों के त्यों अवशोषित हो जाते हैं।
3. खीस बछड़ों में दस्त तथा न्यूमोनिया के जोखिम को कम करते हैं।
4. खीस वसा, प्रोटीन, विटामिन्स तथा खनिज से परिपूर्ण स्त्रोत होता है।
5. खीस में अनेक हार्मोन व विकास कारक होते है जो कि बछड़े के स्वास्थ्य वृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

खीस कैसे पिलायें:– जन्म के बाद पहले घंटे के भीतर जितना जल्दी हो सके नवजात को खीस पिला देना चाहिए। क्योंकि नवजात की आंतों में उसके जन्म के 24 घंटों तक प्रोटीन के बड़े अणुओं को अवशोषित करने की क्षमता रहती है। इसलिए जन्म के पहले 6 घंटों में लगभग 2.5–3 लीटर या बछड़े के भार के 10 प्रतिशत के बराबर कोलोस्ट्रम पिलाना चाहिए।

कृत्रिम खीस कैसे तैयार करें:– यदि किसी कारणवश गाय या भैंस नवजात को दूध नहीं पिलाती या नवजात के जन्म के बाद गाय या भैंस की मृत्यु हो जाती है तो कृत्रिम रूप से खीस तैयार किया जा सकता है।

ताजा दूध	560 मि.ली.
पानी	280 मि.ली
अरण्डी का तेल	छो चम्मच
अण्डा	एक फेंटा हुआ

डॉ. मनोहर सैन (9829542066)
डॉ. रामचन्द्र तिवाड़ी, कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर

पशुपालकों की आय दोगुनी करने में खरगोश पालन का योगदान

खरगोश से व्यक्ति अपने परिवार के लिए उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीनयुक्त मांस प्राप्त कर सकता है। खरगोश को घर में आसानी से उपलब्ध हरी पत्तियां, घास, गेहूं का चोकर, रसोई घर में उपयोग होने वाली रोजमर्रा की सब्जियों के अवशेष जैसे गाजर, गोभी के पत्ते व अन्य बची हुई सब्जियां खिलाई जा सकती है। ब्रॉयलर खरगोशों में वृद्धि दर अत्यधिक उच्च होती है। वे तीन महीने की उम्र में ही 2 से 3 किग्रा. के हो जाते हैं। मादा खरगोश में प्रजनन क्षमता बहुत अधिक होती है। एक मादा खरगोश समागम के 30 दिनों (मादा खरगोश का गर्भकाल 30 दिनों का होता है) के पश्चात एक बार में 5 से 12 बच्चों को जन्म देती है और 45 दिन बच्चों को दूध पिलाने के उपरान्त पुनः नर खरगोश से मिलन के लिए तैयार हो जाती है इस तरह एक मादा खरगोश प्रत्येक 45 दिनों में 5 से 12 बच्चों को जन्म देती है। मादा खरगोश द्वारा यह क्रम 5 वर्षों तक चलता–रहता है। अन्य मांस से तुलना करने पर खरगोश के मीट में उच्च प्रोटीन (21 फीसदी) और कम वसा (4 फीसदी) व स्वादिष्ट होता है। इसलिए यह मांस सभी उम्र के लोगों, वयस्क से बच्चों तक के लिए उपयुक्त है। मीट उत्पादन के अलावा वे फर और खाल के लिए भी पाले जाते हैं। दिल के मरीजों के लिए खरगोश का मांस अत्यंत लाभप्रद माना जाता है।

खरगोश पालन से लाभ :– पशु पालन सम्बन्धी किसी भी व्यवसाय में पशुपालक का लाभ पल रहे पशु/पक्षी के भोजन के खर्च पर निर्भर करता है। यदि मुर्गीपालन व्यवसाय को देखें तो, तैयार मुर्गियों के विक्रय से प्राप्त कुल धन में से 80 प्रतिशत लागत मुर्गियों के भोजन पर आती है। चूंकि खरगोश हरी पत्तियां, घास, गेहूं का चोकर, रसोई आदि का बचा हुआ खरगोश बड़े चाव से खाता है व बहुत सी ऐसी घासें हैं जिनकी बुवाई कर पूरे वर्ष भर हरा चारा (घास) प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए मुर्गियों की अपेक्षा खरगोश के भोजन पर आधा से भी कम खर्च आता है और मुर्गी से दुगने दाम में विक्रय होता है, यही नहीं खरगोश पालन में मुर्गीपालन की तरह विक्रय मूल्य में गिरावट नहीं आती है। चोकर की व्यवस्था न हो पाने की दशा में इन्हें बाजार से बना बनाया खाद्यान्न भी खिला कर अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। अच्छी बढ़ोत्तरी के लिए कुछ कंपनियां खरगोश के लिए विशिष्ट खाद्यान्न भी बनाने लगी हैं। खरगोश का मांस विदेश में निर्यात व उत्तरी भारत में भी उपयोग लिया जाता है। खरगोश का मांस निर्यात करने में भारत अभी 30वें स्थान पर है हालांकि अभी तेजी से खरगोश पालन व्यवसाय भारत के सभी राज्यों में फैल रहा है। भारत के कानून के अनुसार भारतीय खरगोश को पकड़ना, मारना व रखना मना है लेकिन 1960 अधिनियम के तहत विदेशी खरगोश को पालने व रखने की अनुमति है।

वंश वृद्धि :– खरगोशों में प्रजनन करने की क्षमता का विकास इनकी उम्र के केवल पांच छह महीनों में ही हो जाता है। एक अच्छी नस्ल का विकास करने के लिए एक नर खरगोश को उसकी उम्र 1 साल बाद ही ब्रीडिंग के उपयोग में लाया जाना चाहिए। प्रजनन के लिए हमेशा एक स्वस्थ और अच्छे भार वाले खरगोश का उपयोग होना चाहिए। जिस नर खरगोश को आप ब्रीडिंग के उपयोग में लाने वाले हैं, उसका अन्य खरगोशों की तुलना में कुछ अतिरिक्त ध्यान रखें और गर्भवती मादा खरगोश का भी उचित देखभाल जरूरी है। व्यवसायिक तौर पर अत्यधिक उपयोग में लायी जाने वाली और लाभकारी नस्लों में सफेद खरगोश, भूरा खरगोश,फ्लेमिश, न्यूजीलैंड सफेद, न्यजीलैंड लाल, कैलिफोर्नियन खरगोश, डच, सोवियत चिंचिला है।

खरगोश पालन के तरीके :– खरगोश को **''डीप लिटर पद्धति''** और **''पिंजरा पद्धति''** दोनों से स्टार्ट किया जा सकता है। खरगोश को पिंजड़े में पाला जा सकता है जिसका निर्माण कम निवेश में भी संभव है। खरगोशों को मौसमी परिस्थितियों जैसे तेज गर्मी, बरसात और कुत्तों और बिल्लियों से बचाने के लिए भी शैड अति आवश्यक है। शैड 4 फिट चौड़ा तथा 10 फीट लम्बा व 1.5 फिट ऊंचा बनाया जाता है। अब पार्टीशन देकर 2 बाई 2 के 10 बराबर बॉक्स बना लिए जाते हैं तथा इस शैड को जमीन से 2 फिट ऊंचाई पर रखते हैं जिससे खरगोश की बीट व पेशाब सीधे जमीन पर गिरे।

शैड निर्माण हेतु ध्यान देने योग्य बातें

1. खरगोश को जालीनुमा फ्रेम बॉडी में रखें।
2. खरगोश पालन के लिए जिस जगह का चुनाव करें वह वातावरण के अनुकूल होने चाहिए।
3. ऐसी जगह पर खरगोश पालन करें जहां हवा का आवागमन हो।
4. गर्मियों में अधिक से अधिक 38 सेन्टीग्रेड डिग्री तक खरगोश तापमान सहन कर सकते हैं। इसलिए गर्मियों में उचित रखरखाव करें।
5. खरगोश को जमीन से 1 या 2 फीट की ऊंचाई पर रखना चाहिए जिससे मल–मूत्र आसानी से नीचे गिर जाए।
6. खरगोश को बिल्ली तथा कुत्तों से बचाने के लिए विशेष इंतजाम करें।

भोजन :– साधारणतया खरगोश सभी प्रकार के भोजन, अनाज खाने के लिए जाने जाते हैं लेकिन एक पौष्टिक आहार ही किसी की अच्छी वृद्धि निश्चित करता है। इसलिए हमेशा खरगोश को पौष्टिक और उच्च गुणवत्ता वाला भोजन खिलाने की कौशिश करें। रसोईघर में उपयोग होने वाली रोजमर्रा की सब्जियों के अवशेष जैसे गाजर, गोभी के पत्ते अन्य सब्जियां जो आपके रसोईघर में बच गई हैं, इन्हें खरगोशों को खिला सकते हैं।

खरगोश पालन में लागत :– खरगोश पालन में उपभोक्ता (खरीदार) को यूनिट खरीदने होते हैं। एक यूनिट में (4 मादा और 3 नर) ब्रायलर खरगोश आते हैं। एक यूनिट की कीमत 20,000 रूपये है। फॉर्म की शुरूआत 6 व 10 यूनिट से की जा सकती है। 10 यूनिट से फॉर्म की शुरूआत करने से प्रत्येक 40 दिन पर आय लगभग 61,000 रूपये होती है। 1000 (100 यूनिट) खरगोश के देखभाल 2 मजदूर अथवा पति–पत्नी मिलकर भी कर सकते हैं। खरगोश पालन में ज्यादा देखरेख की आवश्यकता नहीं होती है, मात्र सुबह–शाम खाली समय में देखभाल की जा सकती है।

क्रय एवं विक्रय :– 3 माह के तैयार खरगोश जिनका वजन करीब 2 किग्रा. का हो, विक्रय के लिए अनुकूल माने जाते है। किसान के लिए खरगोश पालन में तैयार खरगोश का विक्रय बहुत ही आसान है। तैयार खरगोश को किसान सीधा बेच सकता है या जहां कहीं से किसान फार्म लगाने के लिए ब्रीड खरीदता है उस फर्म को बेच सकता है। किसान विक्रय के लिए उस फर्म से 3–5 वर्ष का करार भी कर सकता है। 1 खरगोश के 3 माह तक पालन मे औसतन 47–99 रूपये की लागत आती है। 2 किलोग्राम का खरगोश लगभग 167 रूपये प्रति किग्रा की दर से विक्रय होता है।

विपणन :– भारत में खरगोश पालन के लिए विपणन हमेशा से एक गंभीर समस्या बनी हुई है जो अब भी ज्यों के त्यों हैं। वैसे इस व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए भारत में अनेकों सरकारी और स्वयं सेवी संस्थाएं लगी हुई हैं लेकिन अभी भी विपणन समस्या का हल खोजने में नाकाम ही रही है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में खरगोश के मांस की अच्छी मांग है। इसलिए कोई भी व्यक्ति जो इस व्यवसाय को अपनाना चाह रहा हो वह अपने क्षेत्र में इसकी संभावनाएं तलाश कर सकता है।

–डॉ. अभिषेक जोशी, डॉ. प्रवीण कुमार कौशिक,
डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (8005773183)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	पाली, सिरोही, कोटा, सीकर, टोंक, बारां, चूरू, बीकानेर, हनुमानगढ़
मुंहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़, जालोर, नागौर, राजसमन्द, सीकर, टोंक, कोटा, चित्तौड़गढ़, बारां, चूरू, बीकानेर
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, धौलपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़, टौंक, भरतपुर
चेचक/छोटी माता	ऊँट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, पाली, सीकर
लंगड़ा रोग	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर
फेसियोलोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, सीकर, बून्दी, अलवर
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण	गाय, बकरी, भेड़	अजमेर, चित्तौडगढ़, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर, झुंझुनू, अलवर
अश्वों में इन्फ्लुएंजा रोग	घोड़ा	अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

मुर्गी पालन बना आजीविका का जरिया

रिछपाल पुत्र जसवन्तसिंह पतरोड़ा तहसील अनूपगढ जिला श्री गंगानगर का रहने वाला है। पिता की मृत्यु के दौरान गाँव में मजदूरी के अलावा कोई और आय का स्त्रोत नहीं था। छोटी उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारी कंधों पर आ गई फिर उन्होंने 500 रूपये में 4 मुर्गी लेकर घर पर ही पालना शुरू कर दिया व दाना–पानी देने लगे। वहीं उनकी मुलाकात गाँव के पशुचिकित्सक से हुई जिन्होंने राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के बारे में बताया व समझाया। रिछपाल को सूरतगढ़ आने का मौका मिला तो केन्द्र पर आकर केन्द्र के वैज्ञानिकों से मार्गदर्शन लिया केन्द्र के वैज्ञानिकों ने कहा कि मुर्गी पालन करके भी आप अपनी आजीविका चला सकते हो । रिछपाल के पास स्वंय की भूमि नही थी, ऐसे में उनका एक बड़े स्तर पर मुर्गी पालन करने का सपना कई रूक सा गया था परन्तु गाँव के एक व्यक्ति के सहयोग से गाँव के बाहर खाली जगह में एक छोटा शैड़ बनाकर 50 देशी मुर्गी रखने का व्यवसाय प्रारम्भ कर दिया और उनके अण्डे व मांस को बेचकर अपनी आजीविका चलाने लगा। धीरे–धीरे राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के मार्गदर्शन में एक अच्छा व्यवसाय शुरू हो गया। आज रिछपाल महिने में 15 से 20 हजार रूपये मुर्गी फॉर्म से प्राप्त कर लेते हैं। 4 मुर्गियों से शुरू किया गया व्यवसाय आज 400 मुर्गियों तक पहुँच गया है साथ में गाँव के लिए एक प्रेरणा के स्त्रोत बन गये हैं। **सम्पर्क– रिछपाल पतरोड़ा (मो. 7427012334)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

ऊंटों का रख–रखाव कैसे करें

प्रिय, किसान और पशुपालक भाइयो और बहनो !

प्राचीन काल से ही रेगिस्तान का जहाज कहलाने वाले ऊंट का विशेष महत्व रहा है। मरूस्थल के दुर्गम क्षेत्र में आज भी ऊंट गाड़ों से परिवहन, कृषि और सीमाओं की रक्षा के कार्यों में बखूबी इसका उपयोग हो रहा है। ऊंटों की संख्या में कमी आना, हमारे लिए चिंता की बात है। राज्य सरकार ने ऊंट को 'राज्य पशु' का दर्जा देकर इसकी महत्ता को कायम रखा है। ऊंट अपने वजन का 40 प्रतिशत तक भार ढो सकता है। यह पशु रेगिस्तानी परिस्थितियों से भली–भांति अनुकूलित है। यह लंबे समय तक बिना पानी पिये रह सकता है और अपने शरीर के 30 प्रतिशत के बराबर पानी की क्षति को सहन कर सकता है। इसके शरीर की बनावट और कार्यिकी इस प्रकार होती है कि इसमें पानी को शरीर में बनाए रखने की अनूठी क्षमता होती है। ऊंट एक ठंडी रात में 100–150 किलोमीटर की यात्रा आसानी से कर सकता है। विश्व में ऊंट दो वर्गों में पाए जाते हैं। एक कूबड़ ऊंट, मुख्यतया मध्यपूर्व, भारत व उत्तरी अफ्रीका में तथा दो कूबड़ वाले ऊंट मध्य एशिया, मंगोलिया व चीन में पाए जाते हैं। भारत में पाई जाने वाली ऊंटों की नस्लों में बीकानेरी, जैसलमेरी और मेवाड़ी प्रमुख हैं। बीकानेरी ऊंट का सिर गुम्बदाकार तथा आंखों के ऊपर की तरफ ललाट पर एक गड्ढ़ा पाया जाता है जिसे स्टोप कहते हैं जो इस नस्ल का विशेष गुण है। जैसलमेरी ऊंट का रंग मुख्यतः हल्का भूरा तथा शरीर मध्यम आकार का व बीकानेरी ऊंटों की तुलना में हल्का होता है, इसमें स्टोप अनुपस्थित होता है। ऊंट की मेवाड़ी नस्ल पंजाब व राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के इलाकों में पाई जाती है। इसका उपयोग पहाड़ी क्षेत्रों में सामान ढोने, परिवहन व कृषि कार्यों में किया जाता है। शुष्क वातावरण में जब भोजन की कमी होती है तो यह अपने कूबड़ में जमा चर्बी का उपयोग करके जिंदा रह सकता है। ऊंट को ग्वार की फलगटी, चने का भूसा, मोठ व मुंगफली का चारा, गेहूं की तूड़ी और क्षेत्र विशेष में पाये जाने वाला चारा भोजन दिया जाता है। बढ़ती उम्र के ऊंट के बच्चों को यूरिया मोलासिस, मिनरल ब्लॉक भोजन रूप में देने पर उनकी वृद्धि अच्छी होती है। नमक ऊंट के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। गाय–भेड़ की तुलना में इसे लगभग आठ गुणा नमक की आवश्यकता होती है। एक ऊंट को एक सप्ताह में 1 किलोग्राम नमक की जरूरत होती है। ऊंटों में नर व मादा दोनों के लिए प्रजनन काल सर्दियों (नवम्बर से मार्च तक) में होता है। ऊंट के दूध, चमड़ा और खाल के विभिन्न उत्पाद बनाए जाते हैं। ऊंट में मक्खियों से फैलने वाली सर्रा, तिबरसा सबसे आम बीमारी है और वर्षा के मौसम में इसका प्रकोप बढ़ सकता है। चींचड़ आदि ऊंट के शरीर पर चिपके रहते हैं। माईटस के कारण मेंज (खाज़) नामक बीमारी हो सकती है। **–प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414431098**

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **दिसम्बर 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. नीरज कुमार शर्मा 7023556259 पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बकरी प्लेग (पीपीआर) के कारण, लक्षण एवं रोकथाम के उपाय	05.12.2019
डॉ. अरूण कुमार झीरवाल 9461300587 एल.पी.एम. विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	सर्दियों में कुक्कुट पालन	19.12.2019

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी
संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा
प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) अकबर अली गौरी

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224